HOMECOMING
WELCOME

PGPEX 2013

Class of 2024 welcomes Class of 2013

Some facts about class of 2013:

- First Batch to participate in FT Rankings.
- First student ambassador and branding committee came from this batch (Rittick Banerjee, Rajarshi Sen and Disha Chhabra).
- Affectionately called "The Explorers" for their exploring spirit w.r.t. internship.
- Sponsors the IIMC PGPEX Sixth Batch Alumni silver medal for "Greatest Contribution to Campus Life".

HOMECOMING
WELCOME

PGPEX 2014

Class of 2024 welcomes Class of 2014

Some facts about class of 2014:

- First couple Anika Agrawal & Gunjan Rana to join the programme in the same year.
- First lawyer (Saurabh Kumar) to join the MBAEx programme.
- First-time compulsory international immersion to overseas partner schools -Mannheim Business School, Germany and Ashridge Business School, United Kingdom in 2 groups.
- Samara Dielle Almeida: 4.03 CGPA has remained one of the highest CGPA till date in the programme.

Batch of 2024

मैं आया तन्हा
पर तन्हा था मैं कहाँ

जो पत्तों से छनके, पहले दिन ही धूप ने आँखों पे खनक मारी
मानो बड़े दिनों किसी ने प्यार से गालों पे दी हो दुलारी
लकड़ी के पुल से झील ऐसे पार की, जैसे पार की हो सरयू सारी
मानो पहले दिन ही लगा यूं कि रामसेतु पर इतिहास लिखने की अब है मेरी बारी

कोयल की कूक बिगुल की तरह बजी, और NAB की छत मेरी पलकों के ऊपर सजी
कुछ तेज अलग सा ही अंदर दौड़ चला, काम काजी देखो आज पढ़ने चला

सबके मन थक चुके थे, कुछ कहीं पे अटक चुके थे
कुछ के डगमगा गए थे कदम, कुछ को खुद से ही हो रहा था भरम
कुछ की सर उठा की बात करने की आदत चली गई थी, तो कुछ की तो जुबानें ही छीन ली गई थीं
पर सबकी सोच बहुत बड़ी थी, और उससे बड़ी थी चाह अपने आप पर फ़िर से विश्वास करने की

सब हार के आए थे कहीं ना कहीं से, कुछ ने हारा था पाया हुआ कुछ
कुछ को बिना पाए, कुछ हारा लगता था
कुछ ने हारी थी जीती हुई खुशियाँ
तो कुछ थे खुद, कहीं न कहीं खुद से ही हारे

कुछ कमी सी महसूस हो रही थी कर्मभूमि में,
कुछ और करतब सीखने बीच हैं इस खेल में
या शायद यहाँ बस कमज़ोर विपत्तियों से टकराऊँगा
इधर बहादुरी दिखलाऊँगा, तो वीर कहाँ कहलाऊँगा

या शायद ये रणभूमि ही काफ़ी छोटी है, वो यूं नहीं कि मेरी ही गुट्टी खोटी है
वो यूं कि पता है मुझे कि उस मैदान का बड़ा छोटा था व्यास
इससे बड़ी तो छलांग लगा देता मेरा चेतक, जब उसको लगती है प्यास

पर यहाँ मैं आधे से भी कम बदला, ज़्यादा बदला मैं झील के उस पार
जहाँ अपने कमरे में मैं कर रहा था लोगों का इंतजार
बिस्तर छोड़ मैं बाहर निकला, लोगों के अंदर का जानवर निकला

बाकी का साल निकला हमने मस्ती में, आलू परांठा, मैगी, चाय सस्ती में
लेकिन जब पढ़ने बैठे तो ऐसे की आग लगे पूरी बस्ती में...

Anuranjan Mishra
(SuryaKiran)

Life at Joka

CLASS OF 2024

IIM Calcutta's One Year Residential MBA Programme